पूर्णरूप से अनुमानित मत :—

इस वर्ग के अन्तर्गत 'संकेत सिद्धान्त' डिंगडांग अथवा धातु सिद्धान्त, संकेत सिद्धान्त तथा संगीत सिद्धान्त का समावेश किया जा सकता है

[क] संकेत सिद्धान्त :— इस मत के अनुसार आरम्भ में मनुष्य संकेतों से परस्पर सम्पर्क रखते थे। फिर जब उनकी आवश्यकताएं बढ़ी उन्होंने एक साथ मिलकर विभिन्न पदार्थों, क्रियाओं आदि के लिए ध्वनि संकेत निर्धारित कर लिए।

यह मत निरर्थक है क्यों कि यह पूर्णरूप से अनुमान पर आधारित है। अन्यथा भाषा के अभाव में यह सम्भव ही नहीं हो सकता कि पदार्थों के नाम निर्धारित किए जाय। जब भाषा ही नहीं है तब, विचार विमर्श कैसे होंगे? जब किसी शब्द का ज्ञान ही नहीं है तब किसी पदार्थ के लिए कोई शब्द कैसे निर्धारित किया जायेगा।

[ख] डिंग डिंग डांग अथवा धातु सिद्धान्त :—

डिंगडांग अथवा 'धातु' सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक वस्तु से एक विशेष प्रकार की ध्वनि प्रकट होती है। (यथा— किसी वस्तु पर चोट करने से एक प्रकार की आवाज निकलती है) आदिम मनुष्य में एक प्राकृतिक शक्ति थी कि वह किसी वस्तु के सम्पर्क में आने पर एक विशेष प्रकार की ध्वनि करता था। इन सहज अभिव्यक्त ध्वनियों एवं उनसे सम्बन्धित पदार्थों के मध्य एक अज्ञात सम्बन्ध स्थापित था। इस सिद्धान्त के मानने वालों ने इस अनायास रूप से अभिव्यक्त ध्वनियों को 'धातु' की संज्ञा दी है। उनके अनुसार

इन्हीं धातुओं में से भाषा का विकास हुआ।
उपर्युक्त कल्पना मात्र अटकल है। आदि मानव में ऐसी प्राकृतिक शक्ति की कल्पना के लिए कोई आधार नहीं है। फिर धातुओं में से समस्त शब्दों एवं पूरी भाषा के विकास की कल्पना, भारोपीय परिवार से तो चाहे मेल रखा जाय, संसार की समस्त भाषाओं से उसका ताल मेल बिठाना सम्भव नहीं है।

[ग] संगीत सिद्धान्त :— इस सिद्धान्त के अनुसार आदिम मनुष्य, खाली समय में मन बहलाव के लिए उच्चारण अंगों को चलाकर गुनगुनाता होगा। गुनगुनाने की उन निरर्थक ध्वनियों से ही भाषा की उत्पत्ति हुई है।
वास्तव में यह भी मात्र अनुमान ही है। गुनगुनाहट की निरर्थक ध्वनियां कैसे सार्थक प्रतीक बन गयी, इस शंका का कोई समुचित समाधान नहीं है।

आंशिक अनुमानित मत :— इस वर्ग में 'अनुकरण सिद्धान्त', भावाभिव्यक्ति सिद्धान्त, श्रमनिवारण सिद्धान्त को रखा जा सकता है।

[घ] अनुकरण सिद्धान्त :— अनुकरण सिद्धांत के अनुसार मनुष्य ने अपने इर्द-गिर्द होने वाली पशु-पक्षियों अथवा प्राकृतिक पदार्थों की ध्वनियों का अनुकरण करके भाषा सीखी। इसके प्रमाण में हरेक भाषा के कुछ अनुकरणात्मक शब्दों का उल्लेख किया जाता है। जैसे- का-का के आधार रखा हुआ नाम 'कागा' अथवा 'म्याऊं' ध्वनि के आधार पर बिल्ली के लिए चीनी भाषा में प्रयुक्त 'मिआऊ' अथवा हिन्दी 'म्याऊं' आदि। या फिर, पेड़ से कुछ गिरने से आया 'पत' और पत का अर्थ ही गया 'गिरना' और गिरने वाला पदार्थ कहलाया 'पत्ता'।

[ङ] भावाभिव्यक्ति सिद्धान्त :— इस सिद्धान्त के ~~मानने वालों का विचार है कि श्रम की थकान का~~ अनुसार भावों की तीव्रता के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से अनायास ही कुछ ध्वनियां निकल पड़ी होंगी। भावाभिव्यक्ति की इन ध्वनियों से उस भाव विशेष का सम्पर्क हो गया होगा एवं आगे चलकर इन्हीं ध्वनियों से भाषा का विकास हुआ होगा। अपनी बात की पुष्टि के लिए ये लोग विभिन्न भाषाओं के कुछ विस्मयादिबोधक शब्दों का उल्लेख करते हैं यथा - हिन्दी का ओह! अंग्रेजी का ओह! (oh!) आदि।

[च] ~~इस मत~~ श्रम निवारण सिद्धान्त :— इस सिद्धान्त के मानने वालों का विचार है कि श्रम की थकान को दूर करने हेतु कुछ ध्वनियों का स्वाभाविक रूप से ही

उच्चारण करना पड़ता है। — यथा- धोबी लोग कपड़े धोते समय कुछ ध्वनियों का उच्चारण करते रहते हैं। अथवा भारी बोझा उठाते समय मजदूर लोग एक साथ आवाज करते हैं। इसी प्रकार आदि मानव भी अपने श्रम निवारण हेतु कुछ ध्वनियों का उच्चारण करता रहा होगा, और इन्ही ध्वनियों से भाषा का विकास हुआ होगा।

[घ] विकासवादी सिद्धांत :— इस वर्ग में वे मत आते हैं, जो भाषा की उत्पत्ति की अपेक्षा भाषा की विकास प्रक्रिया पर बल देते हैं एवं भाषा को किसी एक समय में उत्पन्न मानने की अपेक्षा विभिन्न अवस्थाओं का परिणाम मानते हैं। इस वर्ग के अन्तर्गत 'इंगित सिद्धांत', सम्पर्क सिद्धान्त एवं मिश्रित सिद्धान्त को रखा जा सकता है।

[च] इंगित सिद्धान्त :— इस सिद्धान्त के अनुसार भाषा के विकास के चार सोपान माने जाते हैं। पहले सोपान में — हर्ष शोक आदि भाव व्यंजक ध्वनियों का निर्माण हुआ। दूसरे सोपान में अनुकरणात्मक ध्वनियों की रचना हुई। तीसरे सोपान में जीभ आदि उच्चारण अंगो द्वारा शरीर की विभिन्न क्रियाओं, शारीरिक संकेतों की अनुकरणात्मक ध्वनियों का निर्माण हुआ। और चौथे सोपान पर सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के शब्द बने होंगे।

[छ] सम्पर्क-सिद्धान्त :— इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य में सम्पर्क स्थापित करने की सहज प्रवृति है। आरम्भ में चिल्लाना, पुकारना आदि जैसी सामान्य ध्वनियों के द्वारा मनुष्य सम्बन्ध स्थापित करता होगा। ज्यों-ज्यों उसके सम्पर्क की आवश्यकता बढ़ती गई उसके अनुरूप ध्वनियों का विकास होता गया। ध्वनियों एवं स्थितियों में सम्बन्ध होता गया एवं आगे चलकर किसी विशेष ध्वनि से उस स्थिति का बोध होने लगा। यह सिद्धान्त मानव मन की स्वाभाविक प्रकृति एवं उसकी विकास प्रक्रिया पर आधारित होने के कारण अधिक तर्क सगंत है।

[ज] मिश्रित सिद्धान्त :— इस सिद्धान्त के अनुसार भाषा आरम्भ में इंगित एवं ध्वनि दोनो पर आधारित थी। विभिन्न ध्वनि-समूहों से ही आगे चलकर भाषा का विकास हुआ। इस सिद्धान्त के अनुसार आरम्भ में शब्द अनुकरणात्मक, भाव व्यंजक एवं प्रतीकात्मक थे। उदाहरणार्थ— बच्चा माँ-बाप के होठों की गति का अनुकरण करता हुआ अपने होंठ चलाने का प्रयत्न करता है, जिससे अनायास ही कुछ ओष्ठ्य ध्वनियों की अभिव्यक्ति हो जाती है और उसके परिवार वाले समझते हैं कि वह उन्हें पुकार रहा है। यथा- बच्चा सहज भाव से पा--पा, मा--मा, अ--मा आदि ध्वनियों का उच्चारण करता है। लोग समझते हैं कि वह 'माँ' अथवा बाप को पुकार रहा है। इस प्रकार ध्वनियों में अर्थ निहित हो जाता है एवं प्रतीकात्मक शब्दों का निर्माण हो जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी विषय अब उतना उलझा हुआ नहीं है जितना कि वह आरम्भ में था; किन्तु ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि भाषा-उत्पत्ति की समस्या पूर्णरूप से सुलझ गयी है। एक बात अवश्य निश्चित है कि भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न आधुनिक भाषा विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है।

:XOX: